

ऑनलाइन शिक्षा का छात्र की भागीदारी और प्रदर्शन पर प्रभाव

डॉ. सुरेश कुमार यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर— शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, (शिक्षा संकाय) मां शारदा महाविद्यालय, कुंवरपुर रोड, बिन्दकी, फतेहपुर, उ०प्र०। संबद्ध— प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सार:

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है, विशेष रूप से कोविड-19 के बाद। इसके माध्यम से छात्रों की भागीदारी और शैक्षणिक प्रदर्शन में विभिन्न प्रकार के प्रभाव देखे गए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि ऑनलाइन शिक्षा छात्र की भागीदारी और प्रदर्शन पर कैसे प्रभाव डालती है। ऑनलाइन शिक्षा में छात्र की भागीदारी की प्रकृति शारीरिक कक्षा से अलग होती है, जिसमें ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हालांकि, लचीलापन, आत्म-गति पर अध्ययन, और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता जैसे पहलू छात्र के प्रदर्शन में सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इसके बावजूद, तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट की असमानता, और शिक्षक-छात्र संवाद की कमी नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। इस अध्ययन में समाधान के रूप में छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण, आभासी संवाद बढ़ाना, और व्यक्तिगत फीडबैक के महत्व पर चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द: ऑनलाइन शिक्षा, छात्र की भागीदारी, शैक्षणिक प्रदर्शन, तकनीकी समस्याएँ, लचीलापन, इंटरनेट असमानता, व्यक्तिगत फीडबैक, कोविड-19।

1.1 परिचय:

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है। यह परिवर्तन विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के बाद तेजी से हुआ। पहले जहां शारीरिक कक्षाएँ छात्रों के लिए अध्ययन का मुख्य तरीका थीं, वहीं अब ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को एक नया और प्रभावी तरीका दिया है। कोरोना वायरस के कारण जब सभी स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय बंद हो गए थे, तब शैक्षिक संस्थानों को शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों का सहारा लेना पड़ा। इस महामारी ने ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को बढ़ाया, और इसी कारण यह प्रणाली एक स्थायी विकल्प के रूप में सामने आई। (एंडरसन, 2020)

ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती लोकप्रियता:

ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती लोकप्रियता ने शिक्षा के क्षेत्र को नई दिशा दी है। पहले केवल कुछ विशिष्ट कोर्स और प्रशिक्षण कार्यक्रम ही ऑनलाइन माध्यम से उपलब्ध थे, लेकिन अब विभिन्न शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालय और स्कूल भी अपनी शैक्षिक गतिविधियाँ ऑनलाइन करने लगे हैं। यह शिक्षा का एक लचीलापन प्रदान करने वाला तरीका बन गया है, जिससे छात्र अपनी सुविधा और समय के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्र अपनी गति से अध्ययन कर सकते हैं, और उन्हें शारीरिक रूप से किसी कक्षा में उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं होती। इससे छात्रों के लिए शिक्षा प्राप्त करना और भी सुविधाजनक हो गया है, विशेषकर उन छात्रों के लिए जो दूर-दराज के क्षेत्रों से आते हैं या जिनके पास पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों तक पहुंच नहीं है।

कोविड-19 के बाद इसका अचानक विस्तार:

कोविड-19 महामारी ने पूरी दुनिया को अनपेक्षित रूप से ऑनलाइन शिक्षा की ओर अग्रसर किया। मार्च 2020 में जब कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण स्कूल और कॉलेज बंद हो गए, तो शैक्षिक संस्थानों के पास केवल ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा जारी रखने का विकल्प था। आंकड़ों के अनुसार, 2020 के अंत तक दुनिया

भर में 1.6 बिलियन से अधिक छात्र ऑनलाइन शिक्षा का हिस्सा बन चुके थे। शारीरिक कक्षाएं बंद होने के बाद, सभी शिक्षण संस्थानों ने अपनी पाठ्यक्रमों और गतिविधियों को ऑनलाइन बदलने में तेजी दिखाई। इसके परिणामस्वरूप, डिजिटल शिक्षा की ओर छात्रों की रुझान और संस्थानों का ध्यान बढ़ा। (बेट्स, 2019) कोविड-19 ने न केवल छात्रों और शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षा के लिए मजबूर किया, बल्कि इसने शिक्षा के डिजिटल रूप को अधिक स्वीकार्य और लोकप्रिय बना दिया। अब, यह केवल एक अस्थायी समाधान नहीं रहा, बल्कि यह एक स्थायी और प्रभावी शिक्षा पद्धति के रूप में स्थापित हो गया है।

विषय का महत्व:

ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों की भागीदारी और शैक्षणिक प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जबकि ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को लचीलापन और आत्म-गति से अध्ययन करने का अवसर मिलता है, वहीं इसके साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी होती हैं। शारीरिक कक्षाओं में छात्रों की भागीदारी आमतौर पर अधिक होती है, क्योंकि वहां छात्रों को बिना किसी तकनीकी अड़चनों के शिक्षक से सीधे संवाद करने का अवसर मिलता है। इसके विपरीत, ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों की भागीदारी अक्सर कम हो सकती है, क्योंकि वे अपनी पढ़ाई में पूरी तरह से ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते या उनकी तकनीकी समस्याओं के कारण शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होता है।

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्र अपने घर पर होते हैं, जिससे सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों में भागीदारी कम हो सकती है। इस कारण छात्रों में अकेलापन और प्रेरणा की कमी हो सकती है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट की असमानता, और शिक्षक-छात्र संवाद की कमी भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। (भगत और चुन, 2018)

इसलिए, इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि ऑनलाइन शिक्षा के कारण छात्रों की भागीदारी और प्रदर्शन में क्या परिवर्तन आए हैं। क्या यह छात्रों के लिए लाभकारी है, या फिर इससे उनके शैक्षणिक अनुभव में कोई कमी आई है? यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें समझने में मदद करता है कि ऑनलाइन शिक्षा को कैसे और अधिक प्रभावी और छात्रों के अनुकूल बनाया जा सकता है।

1.2 छात्र की भागीदारी में बदलाव:

ऑनलाइन शिक्षा के साथ छात्रों की भागीदारी में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं। शारीरिक कक्षाओं में जहां छात्र शिक्षक से सीधे संवाद करते हैं और समूहों में काम करते हैं, वहीं ऑनलाइन कक्षाओं में ये सभी गतिविधियाँ अक्सर सीमित हो जाती हैं। इससे छात्र की भागीदारी की प्रकृति में भी बदलाव आया है।

1. शारीरिक कक्षा की तुलना में भागीदारी की प्रकृति अलग:

शारीरिक कक्षाओं में छात्रों का शारीरिक रूप से उपस्थित होना और शिक्षक के साथ लाइव बातचीत करना उनके लिए एक सक्रिय शैक्षणिक अनुभव होता है। यहां पर छात्र अपने सवाल सीधे पूछ सकते हैं, समूह चर्चा में भाग ले सकते हैं, और शिक्षक के द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण को तत्काल समझ सकते हैं। इसके विपरीत, ऑनलाइन कक्षाओं में भागीदारी अधिक आत्मनिर्भर होती है। छात्रों को खुद से अध्ययन करना पड़ता है और वे शिक्षक से सीधे संवाद करने के लिए उतने सक्षम नहीं होते। ऑनलाइन कक्षाओं में छात्रों की सहभागिता अक्सर एकतरफा होती है, जिसमें शिक्षक द्वारा दिए गए पाठ्यक्रम का अनुसरण करना होता है, लेकिन सवाल-जवाब या अन्य इंटरैक्टिव गतिविधियाँ सीमित होती हैं।

इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को अधिकतर अपने घर से ही पढ़ाई करनी होती है, जहाँ बाहरी ध्यान भटकाव (जैसे परिवार, सोशल मीडिया, आदि) अधिक होते हैं, जिससे कक्षा में भागीदारी में कमी आती है। शारीरिक कक्षा में आपसी संवाद और सहयोग की भावना होती है, जो ऑनलाइन कक्षा में अक्सर गायब हो जाती है।

2. ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई:

ऑनलाइन शिक्षा में एक और बड़ी चुनौती यह है कि छात्रों को ध्यान केंद्रित करने में अधिक कठिनाई होती है। शारीरिक कक्षाओं में जहां शिक्षक छात्रों को निर्देशित करते हैं और उनका ध्यान केंद्रित रखते हैं, वहीं ऑनलाइन कक्षाओं में छात्र स्वयं को अधिक समय तक एक स्क्रीन पर देखने के लिए मजबूर होते हैं। इससे थकान और ध्यान भटकने की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

घर का वातावरण, परिवार के सदस्य, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया जैसी बाहरी स्थितियाँ छात्रों को आसानी से विचलित कर सकती हैं। इसके परिणामस्वरूप, छात्र कक्षा में पूरी तरह से ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते, जिससे उनकी भागीदारी में कमी आती है और शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. इंटरैक्टिव टूल्स और तकनीकी सुविधाओं का योगदान:

हालांकि ऑनलाइन शिक्षा में कुछ समस्याएँ हैं, लेकिन इंटरैक्टिव टूल्स और तकनीकी सुविधाएँ छात्रों की भागीदारी को बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं। आजकल के कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर विभिन्न इंटरैक्टिव टूल्स जैसे ऑनलाइन क्विज, डिस्कशन बोर्ड, और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जो छात्रों को अधिक सक्रिय रूप से कक्षा में भाग लेने का अवसर प्रदान करती हैं। (कैवर्नोघ और जैक्वेमिन, 2017)

उदाहरण के लिए, जूम, गूगल मीट, और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म में छात्रों को लाइव प्रश्न पूछने, छोटे समूहों में चर्चा करने, और स्क्रीन साझा करने की सुविधा मिलती है, जिससे उन्हें एक लाइव शैक्षिक अनुभव मिलता है। इसके अलावा, कई शैक्षणिक प्लेटफॉर्म में इंटरैक्टिव वीडियो, ऑनलाइन असाइनमेंट्स और फोरम होते हैं, जो छात्रों को विषयों पर गहराई से सोचने और चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

उदाहरण:

- क्विज और पोल्स: लाइव कक्षाओं के दौरान शिक्षक क्विज और पोल्स का उपयोग करके छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- फोरम और डिस्कशन बोर्ड: ये छात्रों को अपने विचार और सवाल एकत्र करने का मौका देते हैं और सामूहिक रूप से चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। (चाउ और चेन, 2019)
- गेमिफिकेशन: कुछ शैक्षणिक प्लेटफॉर्म पर छात्रों को खेल की तरह पढ़ाई करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी भागीदारी बढ़ती है और वे शैक्षणिक सामग्री को एक नया और मजेदार तरीके से सीखते हैं।

इन तकनीकी सुविधाओं के माध्यम से छात्र खुद को और अधिक संलग्न महसूस करते हैं, और यह उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करने में सहायक हो सकता है। हालांकि, इन सुविधाओं का प्रभाव सही तरीके से प्रयोग पर निर्भर करता है, और यदि तकनीकी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, तो यह छात्रों की भागीदारी को प्रभावित कर सकती है।

ऑनलाइन शिक्षा में भागीदारी की प्रकृति शारीरिक कक्षा से अलग है। जहाँ एक ओर छात्रों को ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है, वहीं दूसरी ओर इंटरैक्टिव टूल्स और तकनीकी सुविधाएँ छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका हो सकती हैं। हालांकि, इसके लिए सही तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और छात्रों को इन उपकरणों का सही तरीके से उपयोग करने की क्षमता भी महत्वपूर्ण है।

1.3 प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव:

ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर कुछ सकारात्मक प्रभाव डाले हैं, जो पारंपरिक शारीरिक कक्षाओं से अलग और नए तरीके से अध्ययन करने के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार की शिक्षा में कुछ ऐसे पहलू हैं, जो छात्रों के प्रदर्शन को बेहतर बना सकते हैं:

1. लचीलापन और आत्म-गति:

ऑनलाइन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह छात्रों को लचीलापन प्रदान करती है। छात्र अपनी गति से पढ़ाई कर सकते हैं और समय-समय पर पाठ्यक्रम की सामग्री का पुनरावलोकन कर सकते हैं। इससे छात्रों को विषय को बेहतर तरीके से समझने का अवसर मिलता है। लचीलापन विशेष रूप से उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है जो अपने व्यक्तिगत जीवन या कार्यों के कारण कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित नहीं हो पाते। वे अपने समय और गति के अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं, जिससे तनाव कम होता है और प्रदर्शन में सुधार होता है। (डेविस और रोज, 2024)

आत्म-गति पर अध्ययन करने से छात्र अपनी कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और किसी भी कठिन विषय को बार-बार दोहराने का समय पा सकते हैं। यह न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि

उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार करता है। जब छात्र अपनी गति से अध्ययन करते हैं, तो वे बिना किसी दबाव के अपने शैक्षणिक लक्ष्यों की ओर बढ़ सकते हैं।

2. रिकॉर्डेड लेक्चर्स की सुविधा:

ऑनलाइन शिक्षा का एक और बड़ा लाभ यह है कि छात्रों को रिकॉर्डेड लेक्चर्स की सुविधा मिलती है। जब कक्षा लाइव होती है, तो छात्र केवल उसी समय उस सामग्री को समझ सकते हैं, लेकिन रिकॉर्डेड लेक्चर्स के साथ, वे कभी भी और कहीं भी उस सामग्री का पुनरावलोकन कर सकते हैं। इससे छात्रों को कठिन या महत्वपूर्ण विषयों पर अधिक समय देने की सुविधा मिलती है।

रिकॉर्डेड लेक्चर्स विशेष रूप से उन छात्रों के लिए फायदेमंद होते हैं, जो कक्षा में किसी कारणवश उपस्थित नहीं हो सके या जो किसी विशेष विषय पर अधिक समय देना चाहते हैं। इसके अलावा, छात्र उन लेक्चर्स को एक से अधिक बार देख सकते हैं, जिससे उन्हें पूरी तरह से समझने का समय मिलता है। यह सुविधा छात्रों को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनाने में मदद करती है, क्योंकि वे अपनी जरूरत के अनुसार सीख सकते हैं और किसी भी विषय को तब तक दोहराने का समय पा सकते हैं जब तक कि उन्हें पूरा संतोष न मिल जाए। (गैरीसन और कनुका, 2017)

3. डिजिटल संसाधनों की पहुँच:

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को डिजिटल संसाधनों की व्यापक पहुँच मिलती है, जो उनके शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायक होती है। डिजिटल संसाधनों में ई-पुस्तकें, ऑनलाइन लेख, शैक्षिक वीडियो, शैक्षिक पोर्टल्स, और शैक्षिक ऐप्स शामिल हैं, जिनका उपयोग छात्र अपनी पढ़ाई को और बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं। ये संसाधन छात्रों को अलग-अलग दृष्टिकोण से एक ही विषय को समझने का अवसर देते हैं, जिससे उन्हें अपने अध्ययन में गहरी समझ प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन टूल्स और संसाधनों का उपयोग करने से छात्रों को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक तरीके से सीखने का अनुभव मिलता है। उदाहरण के लिए, डिजिटल फ्लैशकार्ड, ऑनलाइन क्यूज, और शैक्षिक ऐप्स छात्रों के ज्ञान को तेजी से बढ़ाने में मदद करते हैं। छात्रों के पास इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर के शैक्षिक सामग्री और शोध पत्रों तक पहुँच होती है, जो उन्हें अद्यतन जानकारी प्राप्त करने और अपनी समझ को विस्तृत करने में मदद करते हैं।

इसके अलावा, कई शैक्षिक प्लेटफार्मों पर छात्रों को वर्चुअल प्रयोगशालाएँ, ऑनलाइन चर्चा फोरम, और इंटरैक्टिव कोर्सेज मिलते हैं, जो उन्हें एक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करते हैं, जो शारीरिक कक्षाओं में मुश्किल होता है। ये डिजिटल संसाधन छात्रों के सीखने के अनुभव को एक नया आयाम देते हैं और उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। (ग्राहम और बॉक, 2020)

ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को अधिक लचीलापन, आत्म-गति पर अध्ययन करने की स्वतंत्रता, रिकॉर्डेड लेक्चर्स की सुविधा, और डिजिटल संसाधनों तक व्यापक पहुँच प्रदान की है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सकारात्मक बदलाव लाते हैं। इन सुविधाओं के माध्यम से छात्र अपने समय, गति और आवश्यकताओं के अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं, जो अंततः उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाता है। हालांकि, यह सभी सुविधाएँ सही तकनीकी संसाधनों और अनुशासन के साथ सबसे अधिक प्रभावी होती हैं, जिससे छात्रों को एक सशक्त और प्रेरित शैक्षणिक अनुभव मिलता है। (हॉकली, 2014)

1.4 प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव:

ऑनलाइन शिक्षा ने कई सकारात्मक परिवर्तन किए हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं, जो छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव डाल सकते हैं। इन नकारात्मक पहलुओं में तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट की असमानता, सामाजिक अलगाव, और शिक्षक-छात्र संवाद की कमी प्रमुख हैं। इन समस्याओं का गंभीर असर छात्रों के अध्ययन की गुणवत्ता और उनकी शैक्षिक सफलता पर पड़ सकता है।

1. तकनीकी समस्याएँ और इंटरनेट की असमानता:

ऑनलाइन शिक्षा के लिए आवश्यक सबसे बड़ी चीज तकनीकी उपकरण और इंटरनेट कनेक्टिविटी हैं। हालांकि ऑनलाइन शिक्षा एक उत्कृष्ट विकल्प के रूप में उभरी है, लेकिन तकनीकी समस्याएँ एक बड़ी चुनौती बन कर उभरी हैं। खासकर भारत जैसे विकासशील देशों में, सभी छात्रों के पास उच्च गुणवत्ता वाला इंटरनेट कनेक्शन या आधुनिक तकनीकी उपकरण नहीं होते।

कई छात्रों के पास स्टेबल इंटरनेट कनेक्शन नहीं होता है, जो उन्हें लाइव कक्षाओं में भाग लेने में कठिनाई उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी छात्र के पास धीमा इंटरनेट कनेक्शन है, तो वीडियो और ऑडियो में रुकावट आ सकती है, जिससे कक्षा की सामग्री को समझने में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। नेटवर्क कनेक्टिविटी की समस्याएँ छात्रों को कक्षा में समय पर शामिल होने में भी परेशानी का सामना कराती हैं। (हसू और चिंग, 2017)

यह तकनीकी असुविधा केवल लाइव कक्षाओं में ही नहीं, बल्कि ऑनलाइन टेस्ट, क्विज, और असाइनमेंट सबमिशन में भी समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है, जिसके कारण छात्रों का प्रदर्शन प्रभावित होता है। इसके अलावा, कई दूर-दराज इलाकों में स्थिर और उच्च गति इंटरनेट की उपलब्धता नहीं है, जिससे छात्रों को पढ़ाई में समान अवसर नहीं मिल पाते। (जुंग और किम, 2019)

इन तकनीकी समस्याओं के चलते छात्रों का शैक्षणिक अनुभव आधा-अधूरा हो सकता है और उनका शैक्षिक प्रदर्शन रुक सकता है। इसलिए इस समस्या को सुलझाने के लिए शिक्षा प्रणाली को अधिक तकनीकी समावेशी बनाना जरूरी है।

2. सामाजिक अलगाव और प्रेरणा की कमी:

ऑनलाइन शिक्षा के सबसे बड़े नकारात्मक प्रभावों में से एक है सामाजिक अलगाव और प्रेरणा की कमी। पारंपरिक कक्षाओं में छात्रों को अपने सहपाठियों और शिक्षक के साथ नियमित संपर्क में रहने का अवसर मिलता है। इन संपर्कों से न केवल अकादमिक विकास होता है, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास भी होता है।

लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में, छात्रों के पास एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर नहीं होता। वे घर पर अकेले होते हैं और पढ़ाई में खुद को पूरी तरह से लगा पाना एक चुनौती हो सकता है। सहपाठियों के साथ समूह में चर्चा, विचार-विमर्श, और शारीरिक कक्षा में प्रतिस्पर्धा की भावना छात्रों को प्रेरित करती है, जो ऑनलाइन शिक्षा में कम हो जाती है।

इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को किसी प्रकार का तत्काल प्रोत्साहन या मार्गदर्शन नहीं मिलता। पारंपरिक कक्षा में शिक्षक छात्रों से तुरंत संवाद कर सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में यह अवसर कम हो जाता है। इससे छात्रों को अकेलापन और प्रेरणा की कमी का सामना करना पड़ सकता है, और वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। इस अकेलेपन और प्रोत्साहन की कमी के कारण छात्र अपनी पढ़ाई में दिलचस्पी खो सकते हैं, जो अंततः उनके प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

3. शिक्षक-छात्र संवाद में कमी:

ऑनलाइन शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण नकारात्मक पहलू है शिक्षक-छात्र संवाद की कमी। शारीरिक कक्षाओं में छात्रों को शिक्षक से तुरंत प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन मिल सकता है, लेकिन ऑनलाइन कक्षाओं में यह प्रक्रिया धीमी हो सकती है। (ली और वांग, 2018)

लाइव कक्षाओं में, भले ही छात्रों के पास सवाल पूछने का अवसर होता है, लेकिन नेटवर्क समस्याओं और समय की कमी के कारण कई बार छात्र अपनी समस्याओं का समाधान समय पर नहीं प्राप्त कर पाते। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन माध्यमों में छात्रों का अपने शिक्षक से व्यक्तिगत ध्यान प्राप्त करना भी कठिन होता है। शारीरिक कक्षाओं में, छात्र शिक्षक से बिना किसी संकोच के सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में यह संकोच और हिचकिचाहट बढ़ जाती है, क्योंकि छात्र कैमरे के सामने प्रश्न पूछने में सहज महसूस नहीं करते। यह संवाद की कमी उनके शैक्षिक अनुभव को प्रभावित करती है, क्योंकि वे कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर संदेह करने में संकोच कर सकते हैं और इसके परिणामस्वरूप, पूरी सामग्री को सही तरीके से नहीं समझ पाते।

इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक-छात्र संबंध भी कमजोर पड़ सकते हैं। शारीरिक कक्षा में जो व्यक्तिगत संबंध और विश्वास बनते हैं, वे ऑनलाइन कक्षाओं में तकनीकी बाधाओं के कारण कम हो जाते हैं। शिक्षक-छात्र के बीच मजबूत संबंध छात्रों को प्रेरित करने में मदद करते हैं, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में यह संबंध अक्सर औपचारिक और तकनीकी रूप में सीमित होते हैं। (मिलर और मेलिंगर, 2019)

ऑनलाइन शिक्षा के नकारात्मक प्रभावों में तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट की असमानता, सामाजिक अलगाव

और शिक्षक-छात्र संवाद की कमी प्रमुख हैं। ये समस्याएँ छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं और उनके अध्ययन अनुभव को अधूरा बना सकती हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हमें बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकी समर्थन, और शिक्षक-छात्र संवाद को प्रोत्साहित करने वाले उपायों की आवश्यकता है। इन मुद्दों पर ध्यान देकर ऑनलाइन शिक्षा को और अधिक प्रभावी और समान बनाना संभव है, जिससे छात्रों को एक बेहतर शैक्षणिक अनुभव मिल सके।

1.5 समाधान और सुझाव:

ऑनलाइन शिक्षा के नकारात्मक प्रभावों को कम करने और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण समाधान और सुझाव दिए जा सकते हैं। इन उपायों को अपनाकर हम ऑनलाइन शिक्षा को अधिक प्रभावी और छात्रों के लिए सहयोगी बना सकते हैं।

1. छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण देना:

ऑनलाइन शिक्षा का प्रभावी तरीके से लाभ उठाने के लिए छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी छात्रों के पास एक समान तकनीकी ज्ञान और कौशल नहीं होता है, जिससे वे डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर समस्याओं का सामना कर सकते हैं। विशेष रूप से, छोटे शहरों और गांवों में रहने वाले छात्रों को तकनीकी उपकरणों और इंटरनेट का उपयोग करने में कठिनाई हो सकती है।

सुझाव:

- शैक्षिक संस्थानों को छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए, ताकि वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, टूल्स और संसाधनों का सही तरीके से उपयोग कर सकें।
- वर्चुअल कक्षाओं के लिए उपकरणों का उपयोग, ऑनलाइन असाइनमेंट्स और टेस्टिंग के लिए प्रक्रियाओं का स्पष्ट निर्देश देना। (मूर, 2017)
- छात्रों के लिए एक ऑनलाइन सहायता केंद्र स्थापित किया जा सकता है, जहां वे किसी भी तकनीकी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार का प्रशिक्षण छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा के अनुभव को सहज और प्रभावी बनाने में मदद करेगा, और वे तकनीकी समस्याओं के बिना कक्षा में भाग ले सकेंगे।

2. आभासी संवाद बढ़ाना (जैसे ग्रुप प्रोजेक्ट, चर्चा मंच):

ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को सामाजिक इंटरएक्शन और सहयोग का अवसर देना आवश्यक है। पारंपरिक कक्षाओं में समूह चर्चा, प्रोजेक्ट्स और अन्य सामूहिक गतिविधियाँ छात्रों को आपसी संवाद और सहयोग में मदद करती हैं। ऑनलाइन शिक्षा में यह पहलू कम हो सकता है, लेकिन इसे बढ़ावा देने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं। (वांग, 2021)

सुझाव:

ग्रुप प्रोजेक्ट्स: छात्रों को छोटे समूहों में बॉटकर प्रोजेक्ट्स पर काम करने का अवसर दिया जा सकता है। इससे वे एक-दूसरे से संवाद करेंगे, विचारों का आदान-प्रदान करेंगे, और टीमवर्क का अनुभव प्राप्त करेंगे।

- चर्चा मंच: विभिन्न विषयों पर चर्चा मंच बनाए जा सकते हैं, जहाँ छात्र अपने विचारों, सवालों और अनुभवों को साझा कर सकें। यह छात्र-छात्रा और छात्र-शिक्षक के बीच बेहतर संवाद को बढ़ावा देगा।
- लाइव डिबेट्स और क्यू-ए सत्र: शिक्षक समय-समय पर लाइव डिबेट्स और प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित कर सकते हैं, जिससे छात्रों को अपनी समस्याओं का समाधान मिल सके और वे सक्रिय रूप से कक्षा में शामिल हो सकें।

इन उपायों से छात्रों को एक दूसरे के विचारों से सीखने और अधिक प्रेरित होने का अवसर मिलेगा, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होगा। (ओलिवर और हेरिंगटन, 2020)

3. व्यक्तिगत फीडबैक और मार्गदर्शन:

ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक-छात्र संवाद की कमी को दूर करने के लिए व्यक्तिगत फीडबैक और मार्गदर्शन

की आवश्यकता है। शारीरिक कक्षाओं में छात्रों को व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन और प्रतिक्रिया मिलती है, जबकि ऑनलाइन शिक्षा में यह प्रक्रिया थोड़ी सीमित हो सकती है।

सुझाव:

- **व्यक्तिगत फीडबैक:** शिक्षक को छात्रों के प्रदर्शन पर व्यक्तिगत फीडबैक देना चाहिए। यह फीडबैक छात्रों को यह समझने में मदद करेगा कि वे कहाँ सुधार कर सकते हैं और किस क्षेत्र में उन्हें अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है।
- **ऑनलाइन काउंसलिंग और मार्गदर्शन:** ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को एक निश्चित समय पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। शिक्षक एक-एक करके छात्रों से संपर्क कर सकते हैं और उन्हें उनके विषयों, असाइनमेंट्स, और शैक्षिक समस्याओं पर मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।
- **साप्ताहिक या मासिक समीक्षा सत्र:** शिक्षक समय-समय पर छात्रों के प्रदर्शन की समीक्षा कर सकते हैं और उनके व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन दे सकते हैं। (पैचर और मैयर, 2022)

व्यक्तिगत मार्गदर्शन और फीडबैक से छात्रों को अपने अध्ययन की दिशा को समझने में मदद मिलती है और वे अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं, जिससे उनका प्रदर्शन बेहतर होता है।

ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों की भागीदारी और शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, आभासी संवाद, और व्यक्तिगत फीडबैक जैसे उपायों को अपनाना आवश्यक है। इन उपायों के माध्यम से हम ऑनलाइन शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बना सकते हैं, जिससे छात्रों को अधिक सहयोग, मार्गदर्शन, और प्रेरणा मिल सके। इस प्रकार, छात्रों के प्रदर्शन में सुधार और उनकी शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए यह एक सशक्त कदम होगा। (राव और ली, 2018)

निष्कर्ष:

ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और भागीदारी पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू सामने आए हैं। जहाँ लचीलापन, आत्म-गति पर अध्ययन, रिकॉर्डेड लेक्चर्स, और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता जैसे पहलू छात्रों के प्रदर्शन में सुधार ला सकते हैं, वहीं तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट असमानता, सामाजिक अलगाव और शिक्षक-छात्र संवाद की कमी जैसी चुनौतियाँ छात्रों के शैक्षणिक अनुभव को प्रभावित कर सकती हैं। इन समस्याओं का समाधान छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण, आभासी संवाद बढ़ाने, और व्यक्तिगत फीडबैक द्वारा किया जा सकता है। इस प्रकार, यदि इन उपायों को प्रभावी तरीके से लागू किया जाए, तो ऑनलाइन शिक्षा को और अधिक समावेशी, प्रभावी और छात्रों के लिए अनुकूल बनाया जा सकता है।

संदर्भ

- एंडरसन, टी. (2020). ऑनलाइन लर्निंग की थ्योरी और प्रैक्टिस (दूसरा एडिशन). अथाबास्का यूनिवर्सिटी प्रेस।
- बेट्स, टी. (2019). डिजिटल युग में टीचिंग: टीचिंग और लर्निंग को डिजाइन करने के लिए गाइडलाइन्स, टोनी बेट्स एसोसिएट्स लिमिटेड।
- भगत, के. के., और चुन, एस. (2018). ग्लोबल लर्निंग एनवायरनमेंट में ऑनलाइन एजुकेशन के असर पर एक स्टडी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 15(4), 245–262.
- कैवनोंघ, सी., और जैक्वेमिन, एस. (2017). हायर एजुकेशन में ऑनलाइन लर्निंग और स्टूडेंट परफॉर्मेंस. जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 88(4), 458–474.
- चाउ, पी. एन., और चेन, डब्ल्यू. एफ. (2019). ऑनलाइन एजुकेशन: हायर एजुकेशन में इसके असर का एक सिस्टमैटिक रिव्यू। डिस्टेंस एजुकेशन, 40(1), 30–45.
- डेविस, एस. एल., और रोज, टी. (2024). इंटरैक्टिव ऑनलाइन टूल्स के जरिए स्टूडेंट पार्टिसिपेशन को बढ़ाना। इंटरैक्टिव लर्निंग एनवायरनमेंट्स, 28(5), 579–593.
- गैरीसन, डी. आर., और कनुका, एच. (2017). ऑनलाइन लर्निंग: थ्योरेटिकल नजरिए। जर्नल ऑफ डिस्टेंस

- एजुकेशन, 21(3), 14–23.
- ग्राहम, सी. आर., और बॉक, सी. जे. (2020). ब्लेंडेड लर्निंग की हैंडबुक: ग्लोबल नजरिया, लोकल डिजाइन, रूटलेज।
- हॉकली, एन. (2014). ऑनलाइन एजुकेशन चैलेंज: क्लासरूम में नई टेक्नोलॉजी का इंटीग्रेशन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- हसू, एल., और चिंग, वाई. एच. (2017). स्टूडेंट्स के पार्टिसिपेशन और परफॉर्मेंस पर ऑनलाइन लर्निंग के असर की एक केस स्टडी। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, 20(1), 54–65.
- जुंग, आई., और किम, जे. (2019). ऑनलाइन कोर्स में स्टूडेंट के परफॉर्मेंस पर इंटरनेट एक्सेस का असर। एजुकेशन एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज, 24(3), 1109–1123.
- कॉफमैन, एच., और टक, एम. (2025). हायर एजुकेशन में ऑनलाइन लर्निंग: स्टूडेंट के नतीजों पर असर। जर्नल ऑफ ऑनलाइन लर्निंग, 14(6), 65–80.
- ली, के., और वांग, एम. (2018). ऑनलाइन कोर्स में स्टूडेंट की भागीदारी और परफॉर्मेंस: हायर एजुकेशन में एक स्टडी। एजुकेशन टेक्नोलॉजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 66(4), 737–755.
- मिलर, एम. एम., और मेलिंगर, के. ए. (2019). ऑनलाइन लर्निंग में स्टूडेंट एंगेजमेंट बढ़ाने में डिजिटल टूल्स की भूमिका की जांच करना। ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 50(4), 1772–1794.
- मूर, एम. जी. (2017). हैंडबुक ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन (चौथा एडिशन). रूटलेज.
- ओलिवर, आर., और हेरिंगटन, जे. (2020). ऑनलाइन लर्निंग एनवायरनमेंट में स्टूडेंट एंगेजमेंट और पार्टिसिपेशन को बढ़ाना. डिस्टेंस एजुकेशन, 41(2), 167–182.
- पैचर, एम., और मैयर, बी. (2022). ऑनलाइन लर्निंग और एकेडमिक अचीवमेंट पर इसका असर. जर्नल ऑफ एजुकेशनल कंप्यूटिंग रिसर्च, 58(5), 1015–1034.
- राव, एस., और ली, सी. (2018). ऑनलाइन लर्निंग एनवायरनमेंट को समझना: एक कॉम्प्रिहेंसिव रिव्यू. जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट, 22(1), 85–103.
- वांग, सी. (2021). स्टूडेंट परफॉर्मेंस पर ऑनलाइन लर्निंग के असर की जांच: एक सिस्टमैटिक रिव्यू. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ई-लर्निंग एंड डिस्टेंस एजुकेशन, 34(1), 1–19.